भारिल्ल बन्धुओं की जन्मस्थली बरौदास्वामी में –

अहिंसा शोध संस्थान का शिलान्यास सानन्द संपन्न

बरौदास्वामी-ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर द्वारा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की जन्मस्थली बरौदास्वामी-ललितपुर (उ.प्र.) में बनाये जाने वाले एक भव्य अहिंसा शोध संस्थान का शिलान्यास माननीय प्रदीपजी जैन 'आदित्य' (ग्रामीण विकास राज्यमंत्री भारत सरकार) द्वारा किया गया।

केन्द्रीय मंत्री प्रदीप जैन भाषण दे रहे हैं, भारिल्ल बंधु आदि विशिष्ट अतिथि बैठे सुन रहे हैं

शिलान्यास के पूर्व शोध संस्थान के सम्बन्ध में बोलते हुए प्रदीप जैन 'आदित्य' ने कहा कि मेरी राय में इस शोध संस्थान का नाम **डॉ. हुकमचंद भारिल्ल अहिंसा शोध संस्थान** रखा जाना चाहिये। उन्होंने जनता से अपील करते हुए उनकी राय जानने की कोशिश की। सभी उपस्थित सहस्राधिक जनता ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच हाथ उठाकर सच्चे दिल से उनकी बात का समर्थन किया। इसप्रकार इस शोध संस्थान का नाम **डॉ. हुकमचंद भारिल्ल शोध संस्थान** हो गया।

शिलान्यास सभा की अध्यक्षता अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

इस अवसर पर आस-पास के गांव के लगभग 1000-1200 ग्रामीणों के साथ-साथ इन्दौर, ललितपुर, टीकमगढ, चन्देरी, सागर एवं आसपास के क्षेत्रों के लगभग 400 जैन भाई-बहिन पधारे। इसप्रकार कार्यक्रम में लगभग 1500-1600 लोग उपस्थित थे।

शिलान्यास सभा के पूर्व डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का 'अहिंसा' विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुआ। श्रीमती सुधा चौधरी ने इसी विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। इन सबके पूर्व मन्दिर में लघु शान्तिविधान का आयोजन किया गया।

सभा का संचालन श्री मुकेशजी जैन इन्दौर ने किया। साथ ही उन्होंने अहिंसा शोध संस्थान की रूपरेखा समाज के सामने प्रस्तुत की। ●

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2539) 355 अंक : 7

अरे कर्मन की...

अरे कर्मन की रेखा न्यारी रे, विधिना टारी नांहि टरै।।टेक।।
रावण तीन खण्ड को राजा, छिन में नरक पड़ै।
छप्पन कोट परिवार कृष्ण के, वन में जाय मरे।।
अरे कर्मन की... ।।1।।
हनुमान की मात अंजना, वन-वन रुदन करै।
भरत बाहुबलि दोउ भाई, कैसा युद्ध करै।।
अरे कर्मन की... ।।2।।
राम अरु लक्ष्मण दोउ भाई, सिय संग वन में फिरे।
सीता महासती पतिव्रता, जलती अगन पड़े।।
अरे कर्मन की... ।।3।।
पांडव महाबली-सा योद्धा, तिनकी तिया को हरै।
कृष्ण-रुक्मणी को सुत प्रद्युम्न, जन्मत देव हरै ।।
अरे कर्मन की... ।।4।।
को लग कथनी कीजे इनकी, लिखता ग्रंथ भरै।
धर्म सहित ये करम कौनसा, 'बुधजन' यों उचरे।।
अरे कर्मन की... ।।5।।

– कविवर पण्डित बुधजनजी

छहढाला प्रवचन

25 दोष रहित एवं 8 अंग सहित सम्यक्त्व

वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट् अनायतन त्यागो।
शंकादिक वसु दोष विना, संवेगादिक चित पागो।।
अष्ट अंग अरु दोष पचीसों, तिन संक्षेपै कहिये।
बिन जाने तैं दोष गुनन कों, कैसे तजिये गहिये।।११।।
जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै।।
निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज पर को सु दिढ़ावै।।१२।।
धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिनधर्म दिपावै।
इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

यह व्यवहार सम्यग्दर्शन में भी दोषरहित होने की बात है। जातिमद आदि आठ मद, देवमूढ़ता आदि तीन मूढ़ता, कुदेवादि छह अनायतन और शंकादिक आठ दोष - ऐसे पच्चीस दोष हैं; उन्हें पहचानकर छोड़ देना चाहिए और संवेग आदि में चित्त को जोड़ना चाहिए। इसप्रकार निःशंकतादि आठ अंग का पालन और शंकादिक पच्चीस दोषों का त्याग करने को कहा; परन्तु गुण और दोषों का स्वरूप पहचाने बिना गुण का ग्रहण व दोष का त्याग कैसे होगा ?

अत: आगे के छंद में गुण और दोषों के स्वरूप की पहचान कराते हैं, उसे जानकर गुणों का ग्रहण करना और दोषों का त्याग करना। सम्यग्दर्शन के लिए दोषरूप भावों को पहचाने तो उनका त्याग करे और सम्यग्दर्शन के लिए गुणरूप भावों को पहचाने तो उनका ग्रहण करे। दोष को पहचाने बिना उन्हें कैसे छोड़े ?

और गुण को पहचाने बिना उनका ग्रहण कैसे करे ? अत: गुण का ग्रहण व दोष का त्याग करने के लिए उन दोनों का स्वरूप पहचानना चाहिए।

दोष को दोषरूप से जानना दोष का कारण नहीं है; यदि दोष को जानते हुए उसी में रुक जाये और गुणस्वभाव का ग्रहण न करे तो उसे गुण प्रगट नहीं होते और दोष नहीं टलते; परन्तु दोष और गुण दोनों को जानकर गुणस्वभाव की ओर झुकने पर दोष नहीं रहते। जो गुण और दोष दोनों का सच्चा स्वरूप पहचाने, वह अवश्य गुण की ओर उन्मुख होगा और दोषों से विमुख होगा। इसप्रकार गुण-दोष को जानकर गुण का ग्रहण व दोष का त्याग करने के लिए अब संक्षेप में उनका स्वरूप कहते हैं।

प्रशम-संवेग-आस्तिक्य और अनुकम्पा में भी सम्यग्दृष्टि अपने चित्त को लगाता है अर्थात् सम्यग्दृष्टि के परिणाम में उसप्रकार की विशुद्धि रहती है। अनन्तानुबंधी कषाय तो उसके सर्वथा छूट गई है और अन्य कषायें भी मंद हो गई हैं; अत: उसके प्रशांतभाव, संसार से विरक्तभाव और मोक्षमार्ग के प्रति उत्साह, सर्वज्ञदेव और उनके कहे हुए तत्त्वों के प्रति दृढ़ विश्वासरूप आस्तिक्य तथा संसार के दुखी जीव दुखों से छूटकर मोक्षसुख पावें - ऐसे विचाररूप अनुकम्पा, ऐसा परिणाम सहज ही होता है; अत: उपदेश में ऐसा कहा है कि उन संवेगादिक में चित्त को लगाओ।

अब अगले छन्द में गुण-दोषों के कथन के अन्तर्गत सर्वप्रथम सम्यक्त्व के आठ गुण कहते हैं और बाद में पच्चीस दोष कहेंगे।

जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै।।
निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज पर को सु दिढ़ावै।।१२।।
धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिनधर्म दिपावै।
इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै।।

परद्रव्यों से भिन्न अपने शुद्ध एकत्वस्वरूप की रुचि-प्रतीति-श्रद्धा सम्यग्दर्शन है, उसकी महिमा अद्भुत है। ऐसे सम्यग्दर्शन के साथ शंकादि आठ दोषों के अभावरूप नि:शंकतादि आठ गुण प्रकट होते हैं, उनका वर्णन निम्न है -

१. जिनवचन में शंका नहीं करना नि:शंकित गुण है।

२. धर्म के फल में संसारसुख की वांछा नहीं करना। सांसारिक सुख तो पुण्य का फल है, वीतरागी धर्म का फल नहीं। अत: धर्मात्मा को उसकी चाह नहीं होती। यह नि:कांक्षित गुण है।

३. मुनि की देह की मलिनता आदि को देखकर धर्म के प्रति घृणा नहीं करना, उनके धर्म का परम बहुमान करना निर्विचिकित्सा गुण है।

४. तत्त्व और कुतत्त्व, वीतरागदेव और कुदेव इत्यादि के स्वरूप की पहचान करना, इनमें मूढ़ता नहीं रखना अमूढ़दृष्टि गुण है।

५. अपने गुण को तथा अन्य साधर्मी के अवगुण को ढँकने और स्व-पर में वीतरागभावरूप आत्मधर्म की वृद्धि करना, उसका नाम उपगूहन अथवा उपबृंहण अंग है।

६. लोभ-कामवासना आदि के कारण स्व-पर का धर्म से डिगने या शिथिल होने का प्रसंग हो, तब वैराग्य भावना एवं धर्म की महिमा द्वारा स्व-पर को धर्म में स्थिर करना, दृढ़ करना स्थितिकरण है।

७. अपने साधर्मीजनों के प्रति गौवत्स समान सहज प्रेम रखना वात्सल्य है।

८. अपनी शक्ति से जैनधर्म की शोभा बढ़ाना, उसकी महिमा प्रसिद्ध करके प्रभाव बढ़ाना प्रभावना है।

ऐसे नि:शंकितादि आठ गुणों के सेवन से सम्यग्दृष्टि जीव शंकादि आठ दोषों को दूर करते हैं। निश्चय सम्यग्दर्शन में तो पर से भिन्न अपने शुद्धात्मा की नि:शंक श्रद्धा है और उससे भिन्न समस्त परभावों की या संसार की वांछा का अभाव है। उसके साथ होने वाले व्यवहार आठ अंगों का वर्णन निम्नानुसार है। सम्यक्त्व के नि:शंकितादि आठ गुणों और शंकादिक पच्चीस दोषों को जानकर, गुणों का ग्रहण व दोषों का त्याग करने के लिए यह कथन है।

१. नि:शंकता-अंग का वर्णन

सर्वज्ञदेव ने जैसा कहा, वैसे ही जीवादि तत्त्व हैं, उनमें धर्मी को शंका नहीं

होती। यह नि:शंकता सर्वज्ञ के स्वरूप का निर्णय एवं उसकी पहचान सहित है; अत: नि:शंकतादि गुण जीव, अजीव आदि तत्त्वों को अरिहन्तदेव के कहे अनुसार समझने पर ही प्रकट होते हैं। यदि कोई सूक्ष्म तत्त्व समझ में न आवे और विशेष जानने की जिज्ञासा व सन्देहरूप प्रश्न हो तो इससे जिनवचन में सन्देह नहीं हो जाना चाहिये। सर्वज्ञकथित जैनशास्त्रों का कथन सत्य है या आधुनिक विज्ञान का कथन -ऐसा सन्देह धर्मी को नहीं रहता।

अहा ! सर्वज्ञस्वभाव जिसकी प्रतीति में आया, परम अतीन्द्रियवस्तु जिसकी प्रतीति में आई; उसे सर्वज्ञकथित छह द्रव्य, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य, द्रव्य-गुण-पर्याय इत्यादि वस्तु स्वरूप में शंका नहीं रहती। निश्चय से अपने ज्ञानस्वभावरूप आत्मा में परम नि:शंकता है और व्यवहार में देव-गुरु-धर्म में नि:शंकता है। क्या एकमात्र जैनधर्म ही सच्चा है या जगत् के दूसरे धर्म भी सच्चे हैं ? जिसके ऐसी शंका है, उसे तो स्थूल मिथ्यात्व है, उसके व्यवहारधर्म की नि:शंकता भी नहीं है। वीतरागी जैनधर्म के अतिरिक्त अन्य किसी मार्ग की मान्यता धर्मी के कभी नहीं होती।

जिसप्रकार बालक अपनी माँ की गोद में नि:शंक है कि यह मेरी माँ मेरा भला ही करेगी; उसको कोई सन्देह नहीं होता कि कोई मुझे मारेगा तो मेरी माँ मुझको बचायेगी या नहीं ? उसीप्रकार जिनवाणी माता की गोद में धर्मी नि:शंक है कि यह जिनवाणी माँ मुझे सत्यस्वरूप दिखाकर मेरा हित करने वाली है, वह संसार से मेरी रक्षा करेगी। जिनवाणी में उसे सन्देह नहीं रहता। परमेश्वर वीतराग सर्वज्ञ अरहंत जिनपरमात्मा, जिन्होंने अपने केवलज्ञान में वीतरागभाव से सारे विश्व को देखा है, ऐसे परमात्मा को पहचानकर उनमें नि:शंक होना और उनके कहे हुए मार्ग में तथा जीवादि तत्त्वों में नि:शंक होना, नि:शंकता गुण है।

श्री समन्तभद्रस्वामी ने रत्नकरण्डश्रावकाचार में सम्यक्त्व के इन आठ अंगों के पालन में प्रसिद्ध आठ जीवों का उदाहरण दिया है; उनमें नि:शंकित अंग में अंजन चोर का दृष्टांत दिया है। समझाने के लिए प्रत्येक अंग का अलग-अलग दृष्टान्त दिया है; वैसे तो सम्यग्दृष्टि जीवों को एक साथ आठों अंगों का पालन होता है, उनमें से प्रसंग अनुसार किसी अंग को मुख्य कहा जाता है। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन -

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 45-46वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

वण्णरसगंधफासा थीपुंसणउंसयादिपज्जाया।
संठाणा संहणणा सव्वे जीवस्स णो संति।।४५।।
अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।४६।।

(हरिगीत)

स्पर्श रस गंध वर्ण एवं संहनन संस्थान भी।
नर, नारि एवं नपुंसक लिंग जीव के होते नहीं।।४५।।
चैतन्यगुणमय आतमा अव्यक्त अरस अरूप है।
जानो अलिंगग्रहण इसे यह अर्निदिष्ट अशब्द है।।४६।।

वर्ण-रस-गंध-स्पर्श, स्त्री-पुरुष-नपुंसकादि पर्यायें, संस्थान और संहनन- ये सब जीव को नहीं है।

जीव को अरस, अरूप, अगंध, अव्यक्त, चेतनागुणवाला, अशब्द, अलिंगग्रहण (लिंग से अग्राह्य) और जिसे कोई संस्थान नहीं कहा है ऐसा जानो।

सम्यग्दर्शन का ध्येय शुद्धस्वभाव है। आत्मा के शुद्धस्वभाव में वर्ण, रस, गंध, स्पर्श नहीं हैं; स्त्री, पुरुष, नपुंसकादि अवस्थायें, भिन्न-भिन्न संस्थान अर्थात् आकार और संहनन अर्थात् शरीर की पुष्टता इत्यादि शुद्धचैतन्यद्रव्य में नहीं हैं।

जीव में रूप, रस, गंध, स्पर्शादि गुण नहीं हैं, किन्तु वह ज्ञानस्वरूप है। शुद्ध आत्मा में शब्द नहीं तथा वह किसी बाह्य चिह्न, शरीर की नग्नावस्था आदि से पकड़ में आये - ऐसा नहीं है, उसके कोई संस्थान भी नहीं है, ऐसा शुद्ध आत्मा तू जान !

नियमसार की यह गाथा ४६, प्रवचनसार गाथा १७२, समयसार गाथा ४९,

पंचास्तिकाय गाथा १२७, धवल भाग ३, पृष्ठ-२, भावपाहुड़ गाथा ६४, सब एक ही हैं।

विकार अथवा अपूर्ण पर्याय मोक्ष का कारण नहीं हैं, शुद्धस्वभाव कारणपरमात्मा एक ही मोक्ष का कारण है।

यहाँ परमस्वभावभूत कारणपरमात्मा का स्वरूप समस्त पौद्गलिक विकार समूहरूप नहीं है - ऐसा कहा है।

एक समय के विकार से रहित शुद्धभाव को कारणपरमात्मा कहते हैं। मोक्षमार्ग और मोक्ष - ये परमस्वभावभूत नहीं हैं। संवर, निर्जरा और मोक्ष को यहाँ परद्रव्य कहा है, क्योंकि उनके लक्ष्य से राग होता है - धर्म नहीं होता। संवर, निर्जरा और मोक्ष प्रगट होने का कारण नित्यध्रुवस्वभाव है, वह परमस्वभावभूत है, उसमें समस्त विकार का अभाव है, वह पुण्य-पाप के भाव से जानने में आये - ऐसा नहीं है। केवली अथवा यह बात सिद्ध परमात्मा की नहीं है; किन्तु जिसके आधार से केवली अथवा सिद्ध कार्यपरमात्मा प्रगटे ऐसे कारणपरमात्मा, निज आत्मा की बात है।

यह स्वभाव त्रिकाल अन्तर्मुख है, उसके आश्रय से सम्यग्दर्शन प्रगट होता है। पुण्य-पाप अशुद्धभाव है, स्वभाव के आश्रय से अशुद्धभाव का नाश होकर शुद्धभाव प्रगटे - यहाँ उसकी भी बात नहीं है; परन्तु एकरूप अनादि-अनन्त शुद्धभाव का यह अधिकार है। विकार की बुद्धि, पर्याय की बुद्धि, संवर-निर्जरा-मोक्ष की बुद्धि - यह सब पर्यायबुद्धि है और आत्मा को लाभदायक नहीं है। स्वभाव ही एकरूप त्रिकाल है, उसकी बुद्धि करना ही कल्याण का कारण है।

स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण; शरीर के आकार, संस्थान, संहनन, पुद्गल के भेद हैं; शुद्धजीव में वे नहीं हैं।

वास्तव में त्रिकाली आत्मा में लाल, पीले आदि वर्ण नहीं हैं। कोई कोई अज्ञानी जीव कहते हैं कि ध्यान में पीला दिखाई देता है, वह आत्मा का साक्षात्कार है; परन्तु वह भ्रम है। पीला तो रंग है, पुद्गल है, आत्मा में उसका अभाव है। आत्मा में खट्टा, मीठा आदि रस नहीं; कितने ही लोग सुधारस को आत्मा का रस कहते हैं, किन्तु भाई ! वह तो जड़ का रस है, चैतन्यस्वभाव में वह रस नहीं है। शुद्ध आत्मा में सुगन्ध-दुर्गन्ध नहीं। स्त्री-पुरुष-नपुंसक आदि शरीर के आकार

भी आत्मा में नहीं हैं। समचतुरस्त्र आदि संस्थान, वज्रर्षभनाराचादि संहनन आत्मा में नहीं - यह सब पुद्गल के हैं।

एकेन्द्रिय जीवों को मुख्यपने कर्मफलचेतना है, अकेले दुःख का अनुभव कर रहे हैं।

संसार अवस्था में स्थावरनामकर्मयुक्त संसारी जीव को कर्मफलचेतना होती है। मूल गाथा में 'चेदणागुणम्' शब्द है; उसमें से एकेन्द्रियजीव को कर्मफलचेतना है, त्रस जीव को कार्यसहित कर्मफलचेतना है और कार्यपरमात्मा को तथा कारणपरमात्मा को शुद्धज्ञानचेतना है - इस तरह तीन प्रकार का अर्थ टीका में किया है।

एकेन्द्रिय-स्थावर जीव को कर्मफलचेतना है। कन्दमूलादि के जीव अपने शुद्धचैतन्यस्वभाव का भान चूक गए हैं, अतः शुद्धस्वभाव का अनुभव न करके अकेले विकारी फल का अनुभव करते हैं। निगोद का जीव शरीर को तो अनुभवता नहीं; किन्तु पर को मैं भोगता हूँ - ऐसी मिथ्या मान्यता तथा विकार का अनुभव करता है। एकेन्द्रिय जीव को विकार मैं करता हूँ - ऐसा भाव गौण है। वे तो मुख्यपने दुःख का अनुभव अथवा भोग कर रहे हैं।

त्रसजीव विकारी परिणाम के कार्यसहित हर्ष-शोक के फलरूप अनुभव करते हैं।

त्रसनामकर्मयुक्त संसारी जीव को कार्यसहित कर्मफलचेतना होती है। दो इन्द्रिय से लगाकर पाँच इन्द्रिय तक के जीव त्रस हैं, उनमें कीड़ी, मकोड़ा, नारकी, देव, मनुष्यादि आ जाते हैं। वे जीव विकारी परिणाम के कार्यसहित हर्ष-शोक का अनुभव करते हैं। अज्ञानी जीव मानता है कि खाद्य पदार्थ अथवा पैसे का भोग करता हूँ; किन्तु ऐसा नहीं होता। कोई जीव परपदार्थ को भोगता ही नहीं; किन्तु परपदार्थों से मुझे सुख-दुःख है - ऐसे विकारी परिणाम को करता है और हर्ष-शोक भोगता है, कार्यसहित कर्मफलचेतना को भोगता है। दया-दान करूँ अथवा अशुभभाव करूँ - ऐसे परिणाम में चित्त को लगाकर हर्ष-शोक के फल का अनुभव करता है।

इसप्रकार कर्मफलचेतना और कार्यसहितकर्मफलचेतना, दोनों अधर्मफल और संसार है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : एक स्थान पर तो ऐसा कहा कि आत्मा के लक्ष्य से आगम का अभ्यास करो इससे तुम्हारा कल्याण होगा और दूसरे स्थान पर ऐसा कहा कि शास्त्र की ओर होने वाले राग को भी छोड़ दो। ऐसा क्यों ?

उत्तर : पर की तरफ का लक्ष्य बन्ध का कारण होने से शास्त्र की तरफ का राग भी छुड़ाया है और जहाँ आगम का अभ्यास करने के लिये कहा, वहाँ उस आगमाभ्यास में आत्मा का लक्ष्य है, इसलिये व्यवहार से उस आगमाभ्यास को कल्याण का कारण कहा है।

प्रश्न : शास्त्र द्वारा मन से आत्मा जाना हो, उसमें आत्मज्ञान हुआ कि नहीं ?

उत्तर : यह तो शब्दज्ञान हुआ, आत्मा जानने में नहीं आया, आत्मा तो आत्मा से जाना जाता है। शुद्ध उपादान से हुए ज्ञान में साथ में आनन्द आता है, किन्तु अशुद्ध उपादान से हुए ज्ञान में साथ में आनन्द नहीं आता और आनन्द आए बिना आत्मा वास्तव में जानने में नहीं आता।

प्रश्न : शास्त्र द्वारा आत्मा को जाना और बाद में परिणाम आत्मा में मग्न हुए- इन दोनों में आत्मा के जानने में क्या अन्तर है ?

उत्तर : अनन्त गुना अन्तर है। शास्त्र से जानपना किया, यह तो साधारण धारणारूप है और आत्मा में मग्न होकर अनुभव में आत्मा को प्रत्यक्ष वेदन से जानता है। अत: इन दोनों में भारी अन्तर है।

प्रश्न : क्या इन्द्रियज्ञान आत्मज्ञान का कारण नहीं है ?

उत्तर : ग्यारह अंग और नौ पूर्व की लब्धिवाला ज्ञान भी खण्ड-खण्ड ज्ञान है, आत्मा का ज्ञान नहीं। आत्मा अतीन्द्रिय ज्ञानमय है, इन्द्रियज्ञान वह आत्मा नहीं। आँख से हजारों शास्त्र बाँचे और कान से सुने, वह सब इन्द्रियज्ञान है, आत्मज्ञान नहीं। आत्मा अतीन्द्रियज्ञान से जाननेवाला है, इन्द्रियज्ञान से जाने, वह आत्मा नहीं। आत्मा को जानने पर जो आनन्द का स्वाद आता है, वह स्वाद इन्द्रियज्ञान से नहीं

आता; अत: इन्द्रिय ज्ञान आत्मा नहीं है।

प्रश्न : अनुमानज्ञान से आत्मा को जाननेवाले की पर्याय में भूल है या आत्मा जानने में भूल है ?

उत्तर : अनुमानज्ञान वाले ने आत्मा को यथार्थ जाना ही नहीं, अत: आत्मा के जानने में भूल है। स्वानुभव प्रत्यक्ष से ही आत्मा जैसा है, वैसा जानने में आता है। अनुमान से तो शास्त्र और सर्वज्ञ जैसा कहते हैं, वैसा आत्मा को जानता है; परन्तु यथार्थ तो स्वानुभव में ही ज्ञात होता है। स्वानुभव के बिना आत्मा यथार्थ जानने में नहीं आता।

प्रश्न : भगवान की वाणी से भी आत्मा जानने में नहीं आता, तो फिर आप ही बतलाइए कि वह आत्मा कैसे जानने में आता है ?

उत्तर : भगवान की वाणी वह श्रुत है - शास्त्र है और शास्त्र पौद्गलिक है, अत: वह ज्ञान नहीं है - उपाधि है तथा उस श्रुत से होने वाला ज्ञान भी उपाधि है; क्योंकि उस श्रुत के लक्षवाला ज्ञान परलक्ष्यी ज्ञान है और परलक्ष्य से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान स्व को जान सकता नहीं, अत: उसको भी श्रुत के समान उपाधि कहा गया। जिसप्रकार सूत्र शास्त्र ज्ञान नहीं है, बाहर की चीज है - उपाधि है; उसी प्रकार उस श्रुत के लक्ष्य से होने वाला ज्ञान भी बाहर की चीज है - उपाधि है। अहाहा ! कैसी अनोखी है, वीतराग की शैली ? परलक्ष्यी ज्ञान को भी श्रुत के समान उपाधि कहा है। स्वज्ञानरूप ज्ञप्तिक्रिया से आत्मा जानने में आता है, परन्तु भगवान की वाणी से आत्मा जानने में नहीं आता।

प्रश्न : ग्यारह अंग और नव पूर्व का ज्ञानी पंच महाव्रत का पालन करे, तथापि आत्मज्ञान करने में अब उसे और क्या शेष रह गया है ?

उत्तर : ग्यारह अंग का ज्ञान तथा पंच महाव्रत का पालन करने पर भी उसे भगवान आत्मा का अखण्डज्ञान करना शेष रह गया है। ग्यारह अंग का खण्ड-खण्ड इन्द्रियज्ञान किया था, वह खण्ड-खण्ड ज्ञान परवश होने से दु:ख का कारण था। अखण्ड आत्मा का ज्ञान किये बिना वह ग्यारह अंग का ज्ञान नाश को प्राप्त होने पर कालक्रम से वह जीव निगोद में भी चला जाता है। अखण्ड आत्मा का ज्ञान करना ही मूलवस्तु है। इसके बिना भव-भ्रमण का अन्त नहीं।

समाचार दर्शन -

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के आयोजकत्व में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ के संयुक्त निर्देशन में आयोजित श्री आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सोमवार, दिनाँक 24 दिसम्बर से रविवार 30 दिसम्बर तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित जयकुमारजी जैन कोटा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दन कुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित देवेन्द्रजी जैन बिजौलिया, पण्डित ऋषभजी जैन छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी जैन पिड़ावा, पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, पण्डित संजीवजी जैन दिल्ली आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती स्नेहलता- शान्तिलाल चौधरी भीलवाड़ा को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री नेमीचन्द-उर्मिला बघेरवाल भीलवाड़ा, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री नरेश-अर्चना पाटोदी भीलवाड़ा एवं यज्ञनायक श्री महावीर-निर्मला चौधरी भीलवाड़ा थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन डॉ. पी.के. जैन परिवार भीलवाड़ा, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री निहालचन्द घेवरचन्द जैन परिवार जयपुर, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी भैंसा परिवार भीलवाड़ा एवं रत्नत्रय विधान का उद्घाटन श्री नरेशकुमार प्रदीप लुहाड़िया परिवार भीलवाड़ा ने किया।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री कमलकुमारजी बड़जात्या परिवार मुम्बई के करकमलों द्वारा किया गया।

महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 24 दिसम्बर को कालचक्र एवं दिनांक 25 दिसम्बर को सोलह स्वप्नों का प्रदर्शन लेजर द्वारा किया गया। दिनांक 27 दिसम्बर को बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री अजितप्रसादजी जैन परिवार दिल्ली को मिला। पालना झूलन श्री त्रिलोकचन्दजी छाबड़ा परिवार एवं श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ ने किया तथा उसका उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा ने किया। दिनांक 28 दिसम्बर को उज्जैन मुमुक्षु मण्डल द्वारा 'इतिहास के दो सूर्य' नामक नाटिका का बहुत सुन्दर मंचन किया गया।

इस महोत्सव में सीमंधर भगवान, आदिनाथ भगवान एवं महावीर भगवान की प्रतिमाओं के अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकरों की रत्न प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही, जिसमें लगभग 5 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव के सभी कार्यक्रम पण्डित अशोकजी लुहाड़िया के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ●

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

करेली (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन करेली के तत्त्वावधान में दिनांक 23 से 30 दिसम्बर 2012 तक आठ दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली, पण्डित सुदीपजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं मंगलार्थी पीयूषजी झांसी द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर के मंगल आमंत्रणकर्ता श्री ज्ञानचंद अशोक कुमार बड़कुल परिवार तथा ध्वजारोहणकर्ता स्वस्तिक स्टोर्स परिवार थे।

इस शिविर में जिनधर्म के शंखनाद रूप प्रभात-फेरी, जिनेन्द्र-पूजन, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, विभिन्न कक्षायें, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समयसार के निर्जरा अधिकार, क्रिया-परिणाम-अभिप्राय तथा तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय पर डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा प्रौढ कक्षा, पण्डित सुदीपजी, सुमितजी व पीयूषजी द्वारा किशोर वर्ग, बाल वर्ग प्रथम एवं बाल वर्ग द्वितीय की कक्षायें आयोजित की गई।

सभी विषयों की परीक्षा ली गई, जिसमें समस्त शिविरार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण महोत्सव संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर परमागम मंदिर सेवासमिति न्यास लाला का बाजार लश्कर में दिनांक 13 व 14 दिसम्बर 2012 को नवीन वेदी प्रतिष्ठा, जिनबिम्ब विराजमान एवं शिखर कलशारोहण का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

दिनांक 13 दिसम्बर को प्रात: मंगल शोभा यात्रा निकाली गई। ध्वजारोहण पण्डित सुनीलजी शास्त्री मुरार द्वारा एवं मंडप का उद्घाटन श्री वज्रसेनजी जैन लश्कर द्वारा किया गया।

दिनांक 14 दिसम्बर को जिनेन्द्र भगवान की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् जिनबिम्ब विराजमान, शिखर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण कार्यक्रम संपन्न हुये। रात्रि में विविध मनोरंजक कार्यक्रम हुये।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में संपन्न हुये। **– शीतल प्रसाद जैन**

अपूर्व अवसर

गुरुदेवश्री की आत्मसाधना भूमि सोनगढ में गत तीन वर्षों से श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा सफलतापूर्वक संचालित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थीगृह में इस वर्ष कक्षा 6, 7 एवं 8 में अंग्रेजी तथा गुजराती दोनों माध्यम में प्रवेश दिया जा रहा है।

यहाँ छात्रों के आवास, भोजन, चिकित्सा एवं लौकिक शिक्षण की सम्पूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क है। प्रवेश के इच्छुक छात्र आवेदन पत्र मंगाकर 20 मार्च 2013 तक भरकर अवश्य भेज देवें। ध्यान रहे पूर्व कक्षा में 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त छात्र का आवेदन पत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा।

प्रवेश योग्य छात्रों को दिनांक 16 अप्रैल से 20 अप्रैल तक पांच दिवसीय प्रवेश पात्रता शिविर में बुलाया जायेगा, जिसमें छात्र को शिविर की प्रत्येक गतिविधि में उपस्थित रहना आवश्यक है। आवेदन पत्र वेबसाईट **www.vitragvani.com** पर भी उपलब्ध हैं।

संपर्क सूत्र – कामना जैन (प्राचार्य), श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह, राजकोट-भावनगर हाइवे रोड, सोनगढ, जिला-भावनगर 364250 (गुज.) फोन नं. (02846) 244510, 09624807462

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

साप्ताहिक गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा होने वाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 1 दिसम्बर को 'जैन न्याय के विभिन्न महत्वपूर्ण विषय' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. श्रीयांसजी शास्त्री जयपुर (विभागाध्यक्ष-जैनदर्शन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सचिन जैन सागर (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं नितिन जैन झालरापाटन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। गोष्ठी का संचालन नवीन शास्त्री एवं सुमित शास्त्री ने किया। अध्यक्ष महोदय को ग्रन्थ भेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

दिनांक 6 जनवरी को **'क्रमबद्धपर्याय : एक अनुशीलन'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग में हिमांशु जैन (वरिष्ठ उपाध्याय) एवं शास्त्री वर्ग में जिनेश सेठ मुम्बई (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे।

गोष्ठी का संचालन गोम्मटेश चौगुले एवं अनिल जैन भिण्ड ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 20 जनवरी को **'छहढाला : गागर में सागर'** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता टोडरमल महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अमोल अम्बेकर औरंगाबाद (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं शुभम जैन बिनौली व अच्युतकांत जैन जसवंतनगर (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे।

गोष्ठी का संचालन मयंक जैन भिण्ड एवं विवेक जैन गड़ेकर ने किया।

शीतकालीन शिविर संपन्न

पोन्नूर हिल (तमिलनाडु) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर के तत्त्वावधान में दिनांक 24 से 26 दिसम्बर तक शीतकालीन शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री, पण्डित उमापतिजी शास्त्री, पण्डित जयराजजी शास्त्री, पण्डित पद्मकुंवर नाभिराजनजी शास्त्री, पण्डित बाबू शास्त्री, पण्डित जयकुमारजी शास्त्री आदि विद्वानों द्वारा बालबोध पाठमाला, वीतराग-विज्ञान पाठमाला, तत्त्वज्ञान पाठमाला एवं गुणस्थान विवेचन की कक्षाओं का लाभ मिला।

योगसार विधान संपन्न

मुम्बई : यहाँ घाटकोपर में दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज के तत्त्वावधान में पारसधाम के आधुनिक हॉल में दिनांक 22 से 25 दिसम्बर तक योगसार विधान का अयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस कार्यक्रम में लगभग 400 लोगों ने धर्मलाभ लिया, जिसमें श्री कान्तिभाई मोटाणी मुम्बई, श्री प्रवीणभाई वोरा मुम्बई, उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई, श्री विनुभाई शाह मुम्बई, श्री सुमनभाई दोशी राजकोट, ब्र. रमाबेन पारेख देवलाली, श्री महेन्द्रभाई भालाणी, श्री सतीशभाई दोशी मुम्बई, श्री निखिलभाई मेहता, श्री किरीटभाई दोशी मुम्बई, श्री शांतिभाई शाह मुम्बई, श्री विजयभाई जैन हाथरस, श्री बचुभाई पारेख मुम्बई, श्री कमलकुमारजी बड़जात्या मुम्बई आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

पुन: प्रकाशन

पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित एवं डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा हिन्दी अनुवादित सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड एवं अर्थसंदृष्टि का पुन: प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तक के कुल पृष्ठ 1060 एवं मूल्य 175 रुपये (पोस्टेज सहित) है। प्राप्ति स्थान एवं संम्पर्क - पण्डित दिनेशभाई शहा, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई-400022 फोन - 022-24073581

करणानुयोग शिविर

देवलाली-नासिक (महा.) में दिनांक 1 से 6 मार्च 2013 तक डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा करणानुयोग शिविर में कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। इस शिविर में सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका जीवकाण्ड भाग 1 और 2 तथा जैन भूगोल पुस्तकों के आधार से विषय चलेगा। सभी साधर्मी भाई अवश्य लाभ लें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 5 फरवरी 2013	मंगलायतन	वार्षिकोत्सव
14 से 17 फरवरी 2013	बजरंग नगर एवं ढाईद्वीप, इन्दौर	सिद्धचक्र विधान एवं पंचकल्याणक घोषणा
22 से 24 फरवरी 2013	जयपुर	वार्षिकोत्सव
22 से 25 मार्च 2013	अलवर	विधान
26 व 27 मार्च 2013	कोटा(मुमुक्षु आश्रम)	अष्टाह्निका

शोक समाचार

1. जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती कला सेठी धर्मपत्नी श्री नरेश कुमार सेठी आई.ए.एस. (पूर्व अध्यक्ष-भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं दि.जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी, अध्यक्ष-श्री महावीर दि.जैन शिक्षा परिषद् एवं भ.महावीर स्मारक समिति वैशाली) का दिनांक 21 दिसम्बर 2012 को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया।

2. भोपाल (म.प्र.) निवासी पण्डित राजमलजी का 90 वर्ष की आयु में दिनांक 3 जनवरी 2013 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी प्रेरणा से भोपाल में ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना हुई। आप नियमित रूप से दोनों समय चौक मन्दिर में प्रवचन करते थे। भोपाल मुमुक्षु मण्डल द्वारा संचालित गतिविधियों में आपका महत्वपूर्ण मार्गदर्शन रहता था।

3. विदिशा (म.प्र.) निवासी पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल का दिनांक 14 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। आप द्रव्यानुयोग गर्भित करणानुयोग का विशेष अध्ययन करते थे। आप कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी भी थे।

ज्ञातव्य है कि आपके दो पौत्र चिन्मय जैन बड़कुल एवं अनुराग जैन बड़कुल टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन कर चुके हैं।

4. अजमेर (राज.) निवासी स्व. श्री बालचन्दजी लुहाड़िया करांची वाले के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया का 85 वर्ष की आयु में दिनांक 4 जनवरी 2013 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जिनधर्म के संस्कारों से ओतप्रोत थे। आपने जिनधर्म की प्रभावना व जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में ही अपना जीवन समर्पित किया। आपकी भावना के फलस्वरूप अजमेर में **श्री सीमंधर जिनालय** तथा **ऋषभायतन अध्यात्मधाम** जैसे सुन्दर जिनालयों का निर्माण हुआ। आप अनेक संस्थाओं के संचालक एवं संस्थापक रहे। आपके निधन के अवसर पर टोडरमल स्मारक भवन में शोक सभा रखी गई। ज्ञातव्य है कि आपकी ओर से श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर में विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु 4 लाख रुपये प्रतिवर्ष प्राप्त होते हैं।

5. सोलापुर (महा.) निवासी पण्डित अनंतराज बालकृष्ण तुपकर का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 27 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। टोडरमल स्मारक से आपको विशेष अनुराग था।

6. देऊलगांव राजा-वाशिम (महा.) निवासी श्री पद्मकुमार चैतनलाल डोणगांवकर का 80 वर्ष की आयु में दिनांक 28 दिसम्बर को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 300-500/-रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करें - यही मंगल भावना है।

सवाल आपके : जवाब हमारे

जब भी हम पाठशाला में पढते हैं या प्रवचन सुनते हैं तो हमारे मन में ऐसे अनेक सवाल खड़े होते हैं, जिनका हमें जवाब नहीं मिलता। क्या आपके मन में भी ऐसे सवाल हैं ? यदि हाँ, तो निम्न पते पर लिख भेजिये - डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, ए-1704, गुरुकुल टॉवर, जे.एस.रोड़, दईसर (वेस्ट) मुम्बई-68 यहाँ आपके जवाब मिलेंगे - डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया की आगामी कृति सवाल आपके : जवाब हमारे में। सवाल भेजने की अंतिम तिथि 15 मार्च है।

आवश्यक सूचना

वीतराग-विज्ञान के पाठकों को सूचित किया जाता है कि अक्टूबर 2012 से वीतराग-विज्ञान (कन्नड़) का प्रकाशन प्रारंभ हो चुका है; अत: जो कन्नड़भाषी पाठकगण वीतराग-विज्ञान हिन्दी भाषा के स्थान पर कन्नड़ भाषा में मंगाना चाहते हैं, वे पत्र, फोन या ई-मेल द्वारा सूचित करें -

संपर्क सूत्र - टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 फोन- 0141-2705581, 2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

(पृष्ठ 18 का शेष ...)

इस छन्द का भाव आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैंह्न

''याद किया हुआ शास्त्रपाठ, बाह्य वाणी जड़ है, उसमें पुण्य, पाप या धर्म कुछ भी नहीं होता। अन्दर में भवभय उत्पन्न करनेवाले पुण्य-पाप के विकल्पों की रुचि छोड़कर, सर्वप्रकार के राग और वचन को छोड़कर ज्ञानी बाह्य अवलम्बन रहित, नित्य समतारसमय एक चैतन्य चमत्कार का निरन्तर स्मरण करता है। ज्ञानी बाह्य चमत्कार की तुच्छता जानता है, अतः देव-देवी मंत्रादि किसी भी चमत्कार को नहीं चाहता, राग तथा संयोग की किञ्चित् भी महिमा नहीं करता। ज्ञानी ने तो अन्तर्मुख ज्ञानज्योति द्वारा निज अन्तरंग अंग/स्वरूप प्रगट किया है। और जिसके पुण्य - शुभराग व्रतादि आस्रव की रुचि है, उसने बाह्य अंग (स्वरूप) प्रगट किया है, परन्तु वह स्व नहीं है, वह तो विरोधी है, चैतन्य की जाग्रति को लूटनेवाला है। उसका सच्चा अन्तरंग तो त्रिकाल निर्मल चैतन्यस्वरूप है और उसके आश्रय से निर्मल सम्यग्दर्शन-ज्ञान-शांति प्रगट होती है। उससे भिन्न पुण्य-पाप राग का भाव बहिरंग है।[१]''

उक्त छन्द में मात्र यही कहा है कि सच्चे सन्त तो अन्तर्बाह्य जल्पों को, विकल्पों को छोड़कर समतारसमय चैतन्यचमत्कार का स्मरण करते हैं। ज्ञानज्योति द्वारा मोह क्षीण होने पर अन्तरात्मा अपने आत्मा को देखते हैं, उसी में जमते-रमते हैं।।२५९।। ●

१. नियमसार प्रवचन, पृष्ठ ९७